(11) व्रण बंधन के भेद ⇒ (1) स्थानानुसार ⇒ (3)

(i) गाढ़ बंध (ii) समबंध (iii) शिथिल बंध

(i) गाढ़ बंध ⇒ इसमें पीड़न पर भी पीड़ा नहीं होती है एवं इस बँध का प्रयोग माँसल भागों एवं विषम स्थानों पर किया जाता है।

* बंध स्थल ⇒ नितंब, कक्षा, कुक्षि, वंक्षण, उरु व शिर।

(ii) समबंध ⇒ 'नैव गाढो न शिथिलो'।
यह गाढ़ तथा शिथिल बँध के बीच की स्थिती है।

* बंध स्थल ⇒ शाखा, मुख, कान, गण्ड, शिश्न, अण्डकोष, पार्श्व, पृष्ठ, उदर, वक्ष इत्यादि।

(iii) शिथिल बंध ⇒ जो बंध श्वास लेते समय हिले, ऐसे बंध को शिथिल बंध कहते हैं। इस बंध को अतिकोमल स्थानों पर तथा चेष्ठावान संधियों पर बाँधना चाहिये (ताकि उनकी गति हो सके)।

* बंध स्थल ⇒ नेत्र एवं संधि स्थल।

(12) (2) आकारानुसार भेद ⇒ सुश्रुतानुसार - (14)

वाग्भट्टानुसार - (15)

Scanned with CamScanner

भेद ⇒ (1) कोश बंध (2) स्वस्तिक बंध

(3) मुत्तोली बंध (4) दाम बंध (5) अनुवेल्लित बंध

(6) चीन बंध (7) खट्वा बंध (8) विबन्ध

(9) स्थगिका बंध (10) वितान बंध (11) पञ्चाङ्गी बंध

(12) गोफणा बंध (13) यमक बंध (14) मण्डल बंध

(15) उत्संग बंध।

✡ उत्संग बंध, आचार्य वाग्भट्ट की मौलिक देन है।

✡ आचार्य चरक ने व्रण बंधन के ② प्रकारों का वर्णन किया है। यथा ⇒ (1) दक्षिणावर्त्त

(2) वामावर्त्त

⊕ बंध एवं उनके प्रयोग स्थल ⇒

बंधन	आधुनिक नाम	प्रयोग स्थल
(1) कोश बंध	Sheath Bandage	अंगुली व अंगुली पर्व पर
(2) दाम बंध	Four Tailed	सम्बाधांग (तंग व रेठन युक्त अंगों पर)
(3) स्वस्तिक	Figure Of Eight	संधि, कूर्चक, भ्रू, स्तन व कर्ण पर

Scanned with CamScanner

(4) अनुवेल्लित	Spiral	हस्त व पाद पर
(5) मुत्तोली बंध	Triangular	ग्रीवा व लिंग पर
(6) मण्डल बंध	Simple	उदर, उर: एवं बाहु पर
(7) स्थगिका	Recurrent	अंगुष्ठ, अंगुली व शिश्नाग्र पर
(8) यमक बंध	Bandage for two-wounds	संयुक्त व्रणों पर
(9) खट्वा बंध	Four Tailed	हनु, शंख व गण्ड प्रदेश पर
(10) चीन बंध	Many Taied For Eye	नेत्र व अपांग पर
(11) विबंध	Four Tailed	पीठ, उदर व छाती पर
(12) वितान बंध	Cephalic	सिर पर
(13) गोफणा बंध	Spica or T Bandage	हनु, नासा, ओष्ठ, बस्ति व अंस
(14) पञ्चाङ्गी बंध	Five Tailed Bandage	ऊर्ध्वजत्रुगत
(15) उत्संग बंध	Sling Bandage	बाहु पर (आचार्य वाग्भट की मौलिक देन है।)

"कोशदामोत्सङ्ग स्वस्तिकानुवेल्लितमुत्तोलीमण्डलस्थगिकायमकखट्वाचीन-विबन्धवितानगोफणाः पञ्चाङ्गी चेति पञ्चदश बन्धविशेषाः।"

(वाग्भट्ट

Scanned with CamScanner

व्रण बंधन अवधि ⇒ व्रण बंधन को आचार्य सुश्रुत ने ऋतु अनुसार बदलने (change) के निर्देश दिये हैं।

(1) हेमन्त, शिशिर एवं वसन्त ऋतु में ⇒ तीन-तीन दिन में (3-3)

(2) शरद, ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में ⇒ दो-दो दिन में। (2-2)

(सु॰सू॰5/40)

* आपातकाल में बंध बदलने के लिये इन नियमों की आवश्यकता नहीं होती है। (सु॰सू॰5/41)

* शाखा के कटकर संपूर्ण अलग हो जाने पर तैल से दाहकर्म करके, कोशबंध बांधने के निर्देश हैं।

* अण्डकोषों के बाहर निकलने पर तुन्नसेवनी सीवन करके गोफणाबंध बांधने के निर्देश हैं। एवं इसमें स्नेहन एवं सेक निषेध है।

व्रण बंधन के नियम ⇒ व्रण बंधनकर्म के लिये निम्न क्रम का अनुसरण करें।

(i) व्रण में से सर्वप्रथम पूय आदि दोषों को निकालें। (पित्तज तथा रक्तज व्रणों में एक बार में ही दोष निर्हरण करें तथा कफ तथा वातजन्य व्रणों में दोष (पूयादि) को बार-बार निकालें क्योंकि इन व्रणों में पाक की क्रिया मंद होती है एवं पूय धीरे-धीरे बनती है।

Scanned with CamScanner

(ii) व्रण को पञ्चक्षीरी वृक्षों की छाल के क्वाथ से प्रक्षालन करें।

(iii) चूर्ण, घृत, तैल एवं रसक्रियादि आदि शोधन औषधियों को न अतिरुक्ष, न अति स्निग्ध कल्पना बनाकर विकेशिका द्वारा व्रण पर रखें। गुदायुक्त व्रण में वर्ति का प्रयोग करें।

(iv) विकेशिका (Gauze Piece) के ऊपर कदली पत्र रखें। इससे औषधि की रक्षा होती है एवं औषधि, बंधन वस्त्र पर नहीं लगती है।

(v) कदलीपत्र के ऊपर घनी कवलिका (Cotton Pad) रखें।

(vi) अन्त में कवलिका के ऊपर पट्ट बंध बाँध दें।

* सम तथा शिथिल स्थानों पर गाढ़ बंध बांधने पर औषधि निरर्थक हो जाती है और व्रण पर शोफ तथा वेदना उत्पन्न होती है।

Scanned with CamScanner